आपने लिखा

संदर्भ का अंक 85 और 86 मिला। इन अंकों में कुछ लेख पढ़ पाई हूँ जिन पर मैं अपनी टिप्पणियाँ भेज रही हूँ।

अंक 85 में लेख - 'हवा के उस भाग की खोज जो जलने व श्वसन में सहायक है', 'क्वांटम यांत्रिकी की दुनिया', 'बन्दरों से मनुष्य का विकास' को मैं ठीक से पकड़ नहीं पाई और समझ भी नहीं पाई।

लेख काफी लम्बे और जटिल होने के कारण मुझे इन्हें टुकड़ों में पढ़ना पड़ा। हो सकता है मेरे विषय से सम्बन्धित न होने के कारण मुझे उपरोक्त लेख समझने में कठिन लगे हों।

अंक 86 में लेख - 'पढ़ना किसे कहते हैं?', 'अच्छा सोचकर बनाऊँगा' और 'जलने का फ्लॉजिस्टन सिद्धान्त' रुचिकर लगे।

एक और बात मैं बताना चाहती हूँ। कक्षा दसवीं में जनरेटर का सिद्धान्त पढ़ाते हुए, पुस्तक में दिया प्रयोग मैं नहीं करवा पा रही थी। अचानक 'संदर्भ' के पिछले अंक में मराठी-गुजराती संदर्भ के बारे में जानकारी वाले पेज पर इंजेक्शन सीरिंज, तांबे के तार और चुम्बक की मदद से एल.ई.डी. जलाने वाली गतिविधि दिखाई दी। मुझे लगा यह पाठ्य पुस्तकीय गतिविधि का विकल्प हो सकती है। मैं इसे अपने दो-तीन शिक्षक साथियों के साथ करके देखने वाली हूँ। यदि हम इस गतिविधि को सफलता पूर्वक कर पाए तो मैं इसे कक्षा में ज़रूर करवाऊँगी।

मैं इस गतिविधि के अनुभव के बारे में 'संदर्भ' को ज़रूर बताऊँगी।

ज्योति मेडपिलवार
नागपुर, महाराष्ट्र

भूल सुधार

संदर्भ के अंक 86 में निम्न गलतियाँ रह गई हैं।

1. 'गोल-गोल रानी, कितना-कितना पानी' लेख के पेज 11 का अन्तिम पैरा इस तरह से पढ़िए - ग्यान सिंग जी पढ़ाते-पढ़ाते कभी-कभी उदास हो जाते थे और सन्यासियों की तरह बातें करने लगते थे। वे कहते कि पृथ्वी के बगीचे में हम इन्सान पार्टी कर रहे हैं। यदि हम शैतानियाँ करते रहे तो वह हमारे कान उमेठेगी ही। उनके मायने थे कि हम यदि अपने नदी और तालाब खराब करते रहे तो वह हमें टुवूंबा-सा कोई सबक सिखाएगी। सोच लो, बगीचे में रहना पसन्द है या कान पकड़कर बाहर कर दिया जाना?
2. इसी तरह विषय सूची वाले पेज पर अन्तिम लेख का शीर्षक सुधार कर इस तरह से पढ़िए - बारिश एक अलग किस्म की।
3. सवालीराम के जवाब में पेज 67 पर पहले कॉलम में वाक्य - 'ऊर्जा का स्थानान्तरण संवहन' की जगह - ऊर्जा का स्थानान्तरण चालन (conduction) पढ़िए।

इन त्रुटियों के लिए हमें खेद है।

– सम्पादक मण्डल